Vol 3 Issue 4 Oct 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-4, Oct-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

उषा प्रियंवदा के कहानियों में चित्रित समकालिन मध्यवर्गीय जीवन का संत्रास

संदीप श्रीराम पाईकराव
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,इंदिरा गांधी महाविद्यालय, सिडको, नांदेड.

सारांश :वर्तमान समय में आधुनिकता बोध की चकाचौंध में मनुष्य ने भले ही अपने आपको आधुनिक सिध्द करने का खोखला प्रयास आरंभ किया । किंतु यह बात भी उतनी ही सत्य है कि भौतिक सुख–सुविधा में सुख की निरंतर खोज में व्यक्ति अंतरिक धरातल पर मानसिक यातना से जुझता रहा है। वैज्ञानिक क्षेत्र में अपनी उन्नति के चार चॉंद लगाए है । सांस्कृतिक धरातल पर अधिक सुसंस्कृत एवं सभ्य स्थापित करने के खोखले प्रयास में अपनी वेश–भूषा, खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार में अवश्य परिवर्तन किया है । किंतु महानगरीय जीवन में मनुष्य समाज से, परिवार से एवं अपने आपसे कटता जा रहा है । आत्मीयता का अभाव, अकेलेपन की अभिशप्तता, यंत्र के समान संवेदनशून्यता के कारण निराशा, दु:ख, शोक, पीडा, मन:स्ताप, अतिबौध्दिकता से ग्रस्त समकालीन मध्यवर्ग विभिन्न संत्रास से गुहर रहा है ।

प्रस्तवाना :

समकालीन मध्यवर्ग ऊब, असफलता, अकेलापन, पीडा, द्वन्द्व, संघर्ष, अनास्था, वितृष्णा, मोहभंग आदि की विभिषिका के कारण मन:स्ताप जैसी मानसिक संत्रास की स्थिति में जीने के लिए विवश बन गया है । रूचि वैश्यम्य, अहं, हीनता का भाव तथा लैंगिक विफलता के कारण दाम्पत्य जीवन अत्यंत त्रासद बनता जा रहा है । 'टुटे हुए ' कहानी की विदेश में रहनेवाली एवं दाम्पत्य जीवन में मानसिक रूप से टूटी हुई नारी टीटी मन:स्तापी संत्रास के कारण स्वाभाविक से अस्वाभाविक बन जाती है । एब्नार्मल पुत्र के जन्म के पश्चात् उसका मातृत्व आहत होता है । अतृप्त मातुत्व के कारण छटपटाना उसकी नियति है । दूसरों के बच्चों को खेलते हुए देख उसकी व्यथा अत्यंत गहन बन जाती है । अंतरिक वेदना मनुष्य को भीतर–ही–भीतर सालती रहती है । भावातिरेक में व्यक्ति विक्षिप्त बनता है । “टीटी थी कि हॅसते–हॅसते मेज पर औंधी– सी हो आई थी । सहसा उसकी हॅसी बहुत अस्वाभाविक – सी लगने लगी और मैं जान न सका कि वास्तव में वह हॅस रही है या वह हॅसी एक प्रकार की दुख–भरी, हिचकियोंवाले रूदन में बदल गई है ।”[1] वस्तुत: भावातिरेक की अवस्था में मनुष्य की ऐसी अवस्था बन जाती है ।

'चॉद चलता रहा ' कहानी की रोहिनी में अपराध बोध की भावना मन:स्तापी संत्रास को जन्म दे जाती है । नियोजित पति अरविंद की विवाहपूर्व शारीरिक प्यार की इच्छा केवल नैतिकता के भय कारण अस्विकार करती है और जब तीन दिन बाद अरविंद की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है तो वह अपने आपको दोषी पाती है । इसी मन:स्ताप में अविवाहित रहकर अनेकों के साथ शरीर संबंध स्थापित कर अपने आपको दंडित करने का विफल प्रयास करती है । 'सुरंग' कहानी की अरूणा वर्षों घर से दूर रहकर नौकरी करते हुए अकेलेपन की त्रासदी से जुझती है । इकलौते बेटे की मृत्यु के पश्चात् मॉ की उपेक्षा असके संत्राास को और अधिक बढाती है । छोटी बहन बेबी की मन:स्तापी अवस्था का अहसास तब होता है जब रात के बीच, इतने विवश हृदय–विदारक और अनियंत्रिक रूप में फुट पडता है । क्योंकि अरूणा दुख का अंदाजा लगा संकती है कि, “वर्षों तक धीरे–धीरे बढते हुए एक ऐसी स्थिती आ जाती है जब कि वह भार और नहीं ढोया जा सकता । ”[2] 'प्रतिध्वनियॉ ' कहानी की वसु को विवाह एक मिनिंगलेस रस्म लगती है । दाम्पत्य जीवन की घुटन, कुण्ठा, अजनबीपन से मुक्ति पाने हेतू उसकी भटकन प्रारंभ होती है परंतु इस भटकन में उसे पूर्णता प्राप्त नहीं होती बल्कि अत्याधिक मन:स्ताप ही होता है । जिससे उसे सारे संबंध मृतप्राय प्रतीत होते है । उसके लिए सारी दुनिया कालापानी है । सारे लोग मरे हुए है । “ शायद कोई नहीं । न पति, न प्रेमी न मित्र, न संतान न मैं । ”[3]

शारीरिक एवं मानसिक दु:खातिरेक की स्थिति मनुष्य में रूग्णता की स्थिति निर्माण करती है । वर्तमान संत्रास भरे मध्यमवर्गीय जीवन में रूग्णता जन्य संत्रास की स्थिति भयावह है । शारीरिक एवं मानसिक रूग्णता से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य सुख–चैन की तलाश में निरंतर भटकता रहता है । परंतु उसकी भटकन जब समाप्त नहीं होती तब या तो नींद की गोलियॉ खाकर उससे त्राण पाना चाहता है या फिर जीवन समाप्त करने के लिए प्रेरीत होता है । 'नींद' कहानी की नायिका एवं 'प्रतिध्वनियॉ ' कहानी की नायिका में इसी प्रकार के रूग्णता जन्य संत्रास का दर्शन होता है । अपने साथी की आकस्मिक मृत्यु के आघात से विदेशी वातावरण में श्नींदश कहानी की नायिका पूर्ण रूप से टूट जाती है । उसमें रूग्णता का भाव निर्माण होता है । जिससे मुक्ति पाने के लिए रंग रंग की गोलियों का सहारा लेना पडता है । “ गुलाबी और सलेटी कैपसूलों से दर्द मिटता है, छोटी–छोटी लाल गोलियॉ नींद लाने की है, सफेद गोलियॉ’.......... । ”[4] 'प्रतिध्वनियॉ ' कहानी की नायिका रूग्णताजन्य संत्रास में नींद आने के लिए गोलियॉ लेती है । इस रूग्णता से मुक्ति पाने के लिए आत्महत्या करने का प्रयास भी करती है । चाहकर भी किसी को बता नहीं सकती कि “ एक ॲधेरी रात को जीवन से मुडकर और पीडा न सह पाने पर मैंने कई मुट्ठियॉ भर–भरकर बारबिचुरेट खा लिये थे, पर डॉक्टर ने मुझे मरने नहीं दिया । ”[5]

'सागर पार का संगीत ' कहानी की देवयानी माता–पिता की इच्छाविरूध्द एक कैनेडियन पुरूष से विवाह कर विदेश बसी है । अपने देश की मिट्टी की गंध उसे विदेश में चैन से जीने नहीं देती । सदा उसमें एक खालीपन भरा रहता है । उसका पति उसे हर प्रकार से खुश रखने का प्रयास करता है किंतु उसके मन में एक दानव बैठा है जो उसे नोंचता रहता है । मानसिक उलझानों के कारण वह अत्याधिक तनावग्रस्त बनकर रूग्णता का अनुभव करती है । डॉक्टर हुड असकी बीमारी को जानने की कोशिश करते है तब अनायास ही देवयानी के मुख से उसकी रूग्णता का कारण स्पष्ट होता है, “ मैं ऑस्कर को बहुत–बहुत प्यार करती हूॅ, मैं बेहद भरी भी हूॅ, फुलफिल्ड ! और बेहद अकेली भी । कभी–कभी तो मैं इतनी अकेली हो जाती हूॅ कि औस्कर, उसके मित्र, सभी बडी दूर लगने लगते है, जैसे मेरे चारों और एक शीषे की दीवार आ खडी हुई हो । ”[6]

'पुनरावृत्ति' कहानी की संदीपनी पति की स्वच्छंद यौन लालसा तथा “ एक के बाद एक तीन बेटे, फिर तीन बेटियॉ और अंत में जुडवा बच्चों की जोडी, जिनकी मृत्यु कुछ ही दिनों बाद हो गई ।”[7] इस मानसिक आघात से संदीपनी का मानसिक संतुलन खो जाता है । सातवे प्रसव के बाद संदीपनी पागल हो गयी थी । पति के विवाह बाह्य संबंधो की भनक पाकर उसका रूग्णता जन्य संत्रास और अधिक यातनाप्रद बन जाता है । चिरंतन के सम्मुख यक्ष प्रश्न निर्माण होता है, “ कैसे किसी मानसिक रोगों के डाक्टर के साथ संपर्क किया जाए, क्या इलाज हो । कौन देखे इन बच्चों की लाइन डोरी को–यह सब क्यों और कैसे हो गया ।”[8]

स्ंदीपनी की मानसिक रूग्णता और भी अधिक बढती रहती है । उसे अपने तन का, वस्त्र का भी ध्यान नहीं रहता ।

वैज्ञानिक युग के साथ–साथ मध्यवर्गीय शिक्षित युवा वर्ग में बौध्दिकता एवं अतिबौध्दिकता की प्रवृत्ति तीव्रता से बढने लगी । आधुनिकता की दौर में पुरानी मान्यताएॅं, संस्कृति, नैतिकता एवं मूल्यों को बोध्दिकता एवं तार्किक कसौटी पर नापने लगा । यांत्रिकता की दौर में यंत्र के साथ काम करते–करते मनुष्य भी यंत्र रूप में ढलता जा रहा है । उसकी मानवीय संवेदना का स्त्रोत अवरूध्द होता जा रहा है। परिणामत: समकालीन मध्यवर्गीय जीवन बौध्दिकता के संत्रास से आक्रांत बनता जा रहा है । 'संबंध' कहानी की श्यामला युगीन अतिबौध्दिकता की शिकार है । नैतिकता के तमाम बंधनों को तोडकर विवाहित डॉक्टर सर्जन के साथ संबंध स्थापित करती है । सर्जन के विवाह प्रस्ताव पर

उसके उत्तर में बौध्दिकता झलकती है " क्या हम एकसे ही नहीं रह सकते, प्रेमी, मित्र, बंधु ! क्या वह सब छोडना जरूरी है ?मैं तो कुछ नहीं मॉगती ।" [9] किंतु उसकी यही धारणा उसे संत्रास भरे जीवन यापन करने के लिए विवश बना देती है । श्यामला धीरे–धीरे अपने आपसे कटती जाती है । उसमें अजनबीपन, अकेलापन घर कर बैठता है । उससे मुक्ति पाने के लिए उसकी भटकन प्रारंभ होती है । 'प्रतिध्वनियॉ ' कहानी की वसु को परंपरागत दाम्पत्य जीवन से मुक्ति अपने स्वतं., पूर्ण व्यक्तित्व की बडी उपलब्धि मानती है । बौध्दिकता के धरातल पर अपने को खोजने की यात्राा में विभिन्न मानसिकता के संत्रास में फॅसकर टूटने लगती है । 'झूठा दर्पण ' कहानी की अमृता बौध्दिकता के कारण एकाकीपन का जीवन जीने के लिए अभिशप्त है । बौध्दिकता की चकाचौंध में समकालीन युवा पीढी विवाह जैसे बंधन में आबध्द नहीं होना चाहती । विवाह जैसे संबंधो पर उनकी आस्था कम होती जा रही है । माता–पिता के दाम्पत्य जीवन की विफलता में अमृता अपने आपको दोषी पाती है । उसे लगता है कि "यदि वह न होती तो ममी पहले ही डैडी से अलग हो जाती और जीवन के छिन्न सूत्रों को उसी प्रकार सॅवर लेती ।" [10]

इस बौध्दिक संत्रास के कारण ही विवाह जैसे संबंधो पर उसकी आस्था कम हो जाती है । इसके अतिरिक्त 'कोई नही'कहानी की नमिता, 'दो ऑधेरे' की कौशल्या, 'छुट्टी का दिन'की माया, 'आधा शहर' की इला, 'तुफान के बाद' की मन्नो, 'पूर्ति' की तारा जैसे आदि बौध्दिकता के संजाल में जीवन यापन करनेवाले पात्रों के द्वारा उषा प्रियंवदा ने युगीन बौध्दिक संत्रास की अभिव्यक्ति अपनी कहानियों में अत्यंत सशक्त रूप में की है ।

मनुष्य का हर उठने वाला कदम भविष्य की और अवश्य बढता है परंतु उसका दूसरा कदम अतीत में होता है । अतीत से मुक्ति पाना सहज साध्य नहीं होता और तब खास कर जब अतीत संत्रास से भरा हो । 'नींद' कहानी अतीत के कचोटभरे संत्रास की प्रामाणिक गाथा है । कहानी की नायिका चाहकर भी अतीत से मुक्ति नहीं पा सकती । नायिका का मन स्मृतियों के दाने चुगते–चुगते क्षत प्रतिशत घायल होता रहता है । 'कोई नहीं' की नमिता अतीत के संत्रास से छटपटाती है । अक्षय और नमिता के बीच प्रगाढ प्रेमभाव था । अक्षय के विदेश चले जाने वाले के बाद सबकुछ बदल गया । अक्षय ने तो विवाह कर लिया परंतु नमिता के हिस्से खालीपन, अनाहत ऑसु, अकेलापन, रीक्तता, वीरानगी ही आई । नमिता के ह्रदय का प्रेम भावी धीरे–धीरे मर चुका है, इस बात का उसे अफसोस भी नहीं है । परंतु सात वर्षो के पश्चात् जब अचानक अक्षय सामने आता है तब नमिता का अतीत उसे प्रताडित करता है । ' पिघलती हुई बर्फ ' कहानी का अक्षय कचोटभरे अतीत के कारण तनावग्रस्त बन जाता है । उसके ईष्या भाव के कारण कार एक्सीडेंट में बीरू की मृत्यू होती है और सुधीरा घायल हो जाती है । इस पीडाबोध से मुक्ति पाने के लिए स्वदेश तो लौट आता है परंतु अतीत के काले बादल यहॉ भी उस पर हमेशा मंडराते रहते है ।

' चांदनी में बर्फ पर ' कहानी का हेम माता–पिता के विरूध्द मीरा से प्रेम विवाह तो करता है परंतु कुछ ही दिनों में दोनो के बीच सहज अलाप का निर्बाध स्त्रोत अचानक चुक जाने पर अलगाव की स्थिति में आता है । हेम की स्थिति ' न घर का ना घाट का ' बन जाती है । कोशिश करके भी अतीत को भूला नहीं पाता । " कल्याणी से उसका अस्तित्व कुछ ऐसा बँध चुका था कि उसे जीवन से निकाल फेंकने से हेम के अंदर कुछ अपना भी चूर–चूर हो गया ।" [11] ' प्रसंग' कहानी की ममता अपने पूर्व प्रेमी राघव की अचानक मृत्यू का सदमा बरदाश्त नहीं कर पाती । राघव की स्मृतियों से छुटकारा पाने हेतु स्वदेश लौटती है । जीवन से समझौता कर एक विधुर व्यक्ति दिवाकर, जो दो–दो लडकियों के पिता है, उनसे विवाह करती है । दिवाकर को भी पहले पत्नी का दुःख हमेशा सलता रहता है । और समता चाहकर भी अपने अतीत की कचोट से मुक्त नहीं हो पाती । " अपना दुःख उसने जैसे एक छोटी–सी गठरी में बॉधकर अपने अंदर कहीं बहुत गहरे दबा दिया । फिर भी, कभी–कभी वह गॉठ खुल ही जाती थी । और असंबध्द, कमहीन यादे आकर उसके इर्द–गिर्द बिखर जाती थी जिन्हे समेटते हुए उसके हाथ कॉपने लगते थे ।"[12] अतीत का संत्रास वर्तमान को बिघाड देता है । पति–पत्नी साथ होने पर भी अपरिचित ही रहते है ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि समकालीन मध्यवर्गीय जीवन के मनोवैज्ञानिक पक्ष का उषा प्रियंवदा ने अपने कथा–साहित्य में पर्याप्त चित्रण किया हे । व्यक्ति मन की विभिन्न एवं दशाओं का सुक्ष्म अध्ययन कर उसे मनोवैज्ञानिक धरातल पर अभिव्यक्ति प्रदान की है । अतः उषा प्रियंवदा के कहानीयों में चित्रित समकालीन मध्यवर्गीय जीवन के संत्रास के अनुशीलन के पश्चात् प्राप्त तथ्यों को निम्न रूप से अभिव्यक्त किया जा सकता है ।

1.यांत्रिक जीवन ने मनुष्य को एक कमरें में बंद कर दिया है । उसकी संवेदना लुप्त होती जा रही है । जिससे मनुष्य की गति रूक गई है तथा उसके जीवन के पथक्रमण में अनिश्चितता उत्पन्न हो गई है ।

2.अतीत के काले बादलों की छाया वर्तमान को प्रभावित कर रही है । खासकर तब जब अतीत संत्रास भरा हो । उसकी अंदर की बेचैनी, तिलमिलाहट उसे सालती रहती है ।

3.अकेलापन, वितृष्णा, द्वन्द्व, पीडा, ऊब जैसी युगीन स्थितियों से मनःस्तापी संत्राास का अविर्भाव हो रहा है ।

4.वर्तमान संत्रास भरे जीवन में रूग्णताजन्य संत्रास की स्थिति भयावह है । शारीरिक एवं मानसिक रूग्णता से मुक्ति पाने के लिए मनुश्य सुख चौन की तलाश में निरंतर भटक रहा है ।

5.अतिबौध्दिकता का शिकार आधुनिक युवा वर्ग नैतिकता के तमाम बंधनों को तोडकर मुक्त आचरण कर बौध्दिक संत्रास में उलझते जा रहा है ।

संदर्भ सूची :

1उषा प्रियंवदा –संपूर्ण कहानियॉ–टुटे हुए. पृ. 307
2उषा प्रियंवदा – कितना बडा झूठ – सुरंग, पृ. 77
3उषा प्रियंवदा – कितना बडा झूठ – प्रतिध्वनियॉ, पृ. 30
4 उषा प्रियंवदा – कितना बडा झूठ – नींद, पृ. 99
5उषा प्रियंवदा – कितना बडा झूठ – प्रतिध्वनियॉ, पृ. 41
6उषा प्रियंवदा – एक कोई दुसरा– सागर पार का संगीत, पृ. 63
7उषा प्रियंवदा – शून्य तथा अन्य रचनाऍ – पुनरावृत्ति, पृ. 11
8वही, पृ. 12
9उषा प्रियंवदा – कितना बडा झूठ – संबंध, पृ. 13
10उषा प्रियंवदा – एक कोई दुसरा– झूठा दर्पण, पृ. 36
11उषा प्रियंवदा – एक कोई दुसरा– चॉद में बर्फ पर, पृ. 101
12उषा प्रियंवदा – शून्य तथा अन्य रचनाऍ – प्रसंग, पृ. 37

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net